P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जायसी के नागमती विरह–वर्णन में अतिशयोक्ति अलंकार

सारांश

पद्मावत एक प्रेम काव्य है इसमें प्रेम का एक अनूठा वर्णन है, परन्तु नागमती का जो विरह वर्णन है वह अद्वितीय है, अन्यत्र दुर्लभ है। इसका कारण जायसी का सूफी कवि होना है। सूफी कवियों का संकेद्रण अवध के आसपास था, जिससे उनके काव्य की भाषा अवधी होना स्वभाविक है। इसमें विरह श्रृंगार को प्रधानता दी गई है। यह एक प्रेमाख्यामक काव्य है, जिसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से आलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति की गई है इसमें रत्नसेन को जीवात्मा, पदमावती को परमात्मा एवं नागमती को मोह माया के रूप में चित्रित किया है। हीरामन तोते को गुरू के रूप में वर्णित किया गया है क्योंकि गुरू ही वह व्यक्ति है जो आत्मा का परमात्मा से मिलन कराता है। इसमें श्रृंगार के दोनों पक्षों को उद्घाटित किया गया है।

मुख्य शब्द : पद्मावत, प्रेमाख्यामक, जायसी, पद्मिनी, अतिशयोक्ति आदि।

शशिवल्लभ शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
अम्बाह स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
अम्बाह, मुरैना,
मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

"पद्मावत" मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित एक प्रबंध काव्य है। जायसी उत्तर प्रदेश के जायस के रहने वाले थे। इस काव्य में जायसी जी ने अपनी रहस्यवादी प्रवृति का परिचय दिया है। यह दोहा चौपाई में निबंध (सात चौपाई के बाद एक दोहा) मसनवी शैली में लिखा गया एक प्रबंध काव्य है। पद्मावत प्रेम की पीर की व्यंजना करने वाला विशद् प्रबंध काव्य है। इस काव्य के प्रमुख पात्र पद्मिनी और राजा रत्नसेन और रानी नागमती है। राजा रत्नसेन राजकुमारी पद्मिनी के रूप वर्णन को सुनकर उसको पाने की लालसा में अपना काम काज छोड़ कर सिंहलद्वीप की ओर प्रस्थान करता है। इधर नागमती अपने प्रिय के वियोग में एक विरहिणी नायिका बनकर रह जाती है।

यद्यपि पद्मावत एक प्रेम काव्य है इसमें प्रेम का एक अनूठा वर्णन है, परन्तु नागमती का जो विरह वर्णन है वह अद्वितीय है, अन्यत्र दुर्लभ है। इसका कारण जायसी का सूफी कवि होना है। सूफी कवियो का संकेद्रण अवध के आसपास था, जिससे उनके काव्य की भाषा अवधी होना स्वभाविक है। इसमें विरह श्रृंगार को प्रधानता दी गई है। यह एक प्रेमाख्यामक काव्य है, जिसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति की गई है इसमें रत्नसेन को जीवात्मा, पदमावती को परमात्मा एवं नागमती को मोह माया के रूप में चित्रित किया है। हीरामन तोते को गुरू के रूप में वर्णित किया गया है क्योंकि गुरू ही वह व्यक्ति है जो आत्मा का परमात्मा से मिलन कराता है। इसमें श्रृंगार के दोनों पक्षों को उद्घाटित किया गया है। इस काव्य में वियोग श्रृंगार के चारों रूप (पूर्व राग, मान, प्रवास, व करुण) का उल्लेख है। इसमें 57 खण्ड हैं, जिसमें नागमती के वियोग खण्ड को हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि माना जाता है। इसका रचना काल 1540 ई. के आसपास माना जाता है।

वैसे तो सभी प्रेमाख्यानों में सामान्य मानव जीवन की प्रेमकथाएं हैं, लेकिन सूफियों का तर्क है कि इश्क मिज़ाजी (मानवीय प्रेम) इश्क हकीकी (दैविक प्रेम) की सीढ़ी है।

नागमती के विरह वर्णन के सम्बंध में विद्वानों के मत–

1. डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना का मत है कि –"नागमती के विरह निरूपण में जितनी गहनता, आकुलता, मार्मिकता, प्रौढ़ता, प्रांजलता, सजीव, स्वाभाविक और सुकुमारता दिखाई देती है उतनी किसी के भी विरह वर्णन में दृष्टिगोचर नहीं होती है इस कारण नागमती का विरह वर्णन विश्व की अनुपम कृति है।"
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह मत है कि –"नागमती का विरह हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है। वह एक भारतीय नारी का विरह है जो राजमहल और रनिवासों को छोड़कर सामान्य नारी के भांति वन–वन भटकती फिरती है और वृक्ष लता व पशु–पक्षियों से पूछती फिरती है। अपनी विरह व्यथा को दूसरों से व्यंजित करती फिरती है। समस्त प्रकृति उसके

3. आँसुओं से भीगी हुई हैं अपितु दर्शनोत्कंठा और मिलनोत्कंठा का प्राधान्य है।"

अतिशयोक्ति परक अलंकार

यह एक प्रकार का अर्थालंकार है क्यों कि इसमें चमत्कार का सम्बन्ध शब्द या वाक्य के अर्थ से होता है,शब्द विशेष से नहीं। यह अर्थालंकार का प्रमुख भेद है।[1] "जिन अलंकारो में किसी बात का प्रत्यक्षतः बढ़ा–चड़ा कर वर्णन किया जाता है वे अतिशयोक्ति परक अलंकार कहे जाते हैं इस वर्ग मे प्रधान अलंकार अतिशयोक्ति ही है। उसके कई रूप सम्बधातिश्योक्ति, भेदकातिश्योक्ति , चपलातिशयोक्ति और अत्यंतातिशयोक्ति होते हैं। [2]

वैसे तो सभी अलंकारों के मूल में अतिशयोक्ति ही रहती है क्यों कि सौंदर्य वृद्धि का प्रत्येक प्रसाधन किसी बात को बढ़ा–चड़ा कर वर्णन प्रस्तुत करता है।

नागमती के विरह वर्णन में अतिशयोक्ति

पद्मावत में श्रृंगार के दोनों पक्ष संयोग श्रृंगार व विप्रलम्भ श्रृंगार का विवेचन है। नागमती राजा रत्नसेन की पहली पत्नी है। जब रत्नसेन पद्मावती से मिलने को आतुर हो उसकी खोज में चित्तौड़ से चला जाता है तब नागमती अपने प्रिय के वियोग में व्यथित हो कर विरहिणी नायिका बन जाती है। उसके लिए एक–एक महीना गुजारना बहुत मुश्किल हो गया है। इसे और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए जायसी नें अलंकारों का प्रयोग किया है इसमें विरह वर्णन को बढ़ा–चढ़ा कर प्रस्तुत किया है। नागमति के विरह वर्णन में अतिशयोक्ति को निम्न उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं–

बिरह बान तस लाग न डोली
रकत पसीज भीजि तन चोली। [3]

विरह का बाण नागमती के सीने में इस प्रकार लगा है कि हृदय से रक्त निकलने लगता है। जिसके कारण उसकी चोली रक्त रंजित हो जाती है। यहां अतिशयोक्ति है।

आह जो मारी बिरह की आगि उठी तेहि हाँक
हंस जो रहा सरीर महँ पाँख जेर तन थाक। [4]

नागमती जैसे ही आह भरती है उसके हृदय में विरह की तीव्र ज्वाला धधक उठती है, जिससे उस विरहाग्नि ने प्राण रूपी हंस के पंखों को झुलसा दिया। अब वह बुरी तरह से थक चुकी है। यहाँ अतिशयोक्ति इस बात में है कि हृदय में अग्नि अर्थात शरीर के अंदर ज्वाला कैसे उत्पन्न हो सकती है। यहां अग्नि का तात्पर्य हृदय में उठने वाले तीव्र मनोभावों से हैं।

पंचम विरह पंच सर मारै
रकत रोइ सगरौ बन ढारै। [5]

विरह के पाँच बाण ऐसे मारे गए हैं कि नागमती को सहानुभूति देने के लिए कोयल पंचम स्वर में गा रही है और उसके नेत्र विरह के कारण लाल पड़ गए हैं। वह वन में बैठी आँखों से रक्त के आँसू गिरा रही है, जो कि पूर्णतः अतिशयोक्ति है।

बूड़ि उठे सब तरिवर पाता
भीज मंजीठ टेसू बन राता। [6]

वन में पेडों पर जो पत्ते लगे हैं, उन्हें देखकर प्रतीत होता है कि विरह के बाणों की सर्वाधिक चोट इन्हीं को लगी है। सभी पत्ते खून में डूबे हुए प्रतीत होते है और उसी के कारण मंजीठ का फल भी लाल हो गया है।

जेहिं पंखी कहँ अढ़वौ कहि सो बिरह के बात।
सोइ पंखि जाइ डहि तरिवर होइ निपात। [7]

नागमती अपने विरह में व्याकुल होकर वन–वन में मारी–मारी फिर रही है, वह जिस पक्षी के पास बैठकर अपनी विरह व्यथा बताती है, वृक्ष पर बैठा पक्षी जल जाता है। यहाँ नागमती के विरह के ताप के बारे में अतिशयोक्ति की गई है।

बिरह गाजि हनिवत होई जागा
लंका डाह करै तन जागा। [8]

नागमती का विरह हनुमान की भांति गर्जना कर रहा है, वह विरह रूपी हनुमान शरीर रूपी लंका को जला रहा है। इस विरहाग्नि से उसकी शैया भी जल रही है।

दहि भइ स्याम नदी कालिंदी
बिरह कि आगि कठिन असि मंदी।[9]

नागमती के विरह का ताप इतना बढ़ चुका है कि इस विरहाग्नि के कारण यमुना भी जलकर श्याम रंग अर्थात काली हो चुकी है, जो कि संभव नहीं, क्यों कि नदी का जल अग्नि को बुझा देगा न कि उसमें साथ जलेगा।

परवत समुँद मेघ ससि दिनअर
सहि न सकहि यह आगि।[10]

उसकी विरहाग्नि का ताप इतना बढ़ चुका है कि पर्वत, समुद्र , सूर्य तथा चंद्र सबके लिए असहनीय हो गया है, जो कि असंभव है।

तेहि दुख डहे परास निपात
लोहू बूडि उठे परभाते।[11]

नागमती के आँसुओ की व्यथा के कारण वृक्ष पत्ते रहित हो गए हैं और पलास भी उनके रक्त में (आँसुओं) डूब कर लाल हो गए हैं।

राते बिंबि भए तेहि लोहु
परवर पाक फाट हिय गोहूँ।[12]

उसके रक्त के समान आँसुओं से ही बिम्ब फल लाल हो गया है तथा नागमती के विरह ताप के कारण परवर अधिक पक गया है गेंहूँ का हृदय फट गया है, जो कि संभव नही है। यह सर्वथा अतिशयोक्ति ही है।

रकत क आँसु परे भुइँ टूटी
रेंगि चली जनु बीर बहूटी।[13]

नागमती के आँसू रक्त के आँसू थे जब वे धरती पर गिरते हैं तो ऐसा लगता है मानो वीर बहूटियाँ पृथ्वी पर चल रही हों।

चौदह करा कीन्ह परगासू
जनहुँ जरै सब धरति अकासू।[14]

चन्द्रमा में चौदह कलाएँ विद्यमान है। वह शीतलता का प्रतीक है, परंतु नागमती को लगता है कि धरती और अकाश उसके विरह के ताप की वजह से जल रहे है।

अध्ययन का उद्देश्य

नागमती के विरह वर्णन को विवेचित करने का एक मात्र उद्देश्य उसमें प्रयुक्त अतिशयोक्ति अलंकार को दृष्टव्य करना है। नागमती के विरह वर्णन में अतिशयोक्ति के साथ साथ उपमा, रूपक,उत्प्रेक्षा इत्यादि अलंकारों का भरपूर मात्रा में बिम्ब–प्रतिमानों के साथ प्रयोग हुआ है। अलंकार किसी भी काव्य में सर्जना के प्रतिमान होते हैं।

अलंकार के बिना उच्च कोटि के काव्य की कल्पना करना भी असंभव है। अलंकारों से काव्य में शोभा तो आती ही है इसके साथ–साथ वह रोचक और आनंदमयी हो जाता है। अंततः इस शोधपत्र को प्रस्तुत करने का उद्देश्य अतिशयोक्ति अलंकार का अनुशीलन कर स्नातक–स्नातकोत्तर विद्यार्थियों, शोधार्थी, छात्र–छात्राओं तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये भी छात्र–छात्राओं इस अलंकार का परिचय व ज्ञानार्जन कराना है।

निष्कर्ष

पद्मावत एक उच्च कोटि का प्रबंध काव्य है निश्चित ही वह प्रेम की अभिव्यंजना करने वाला एक सफल काव्य है। यह जायसी की प्रतिभा, लगन व दूरदर्शिता का परिणाम ही है। पद्मावत में भी खण्ड 30 नागवती का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य की अनुपम कृति है क्योंकि जो मार्मिकता, वेदना और व्याकुलता नागमती के वियोग वर्णन में है अन्यत्र दुर्लभ है। जायसी ने इसे और बढ़ा–चढ़ कर प्रस्तुत किया है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि नागमती के वियोग वर्णन में अतिशयोक्ति अलंकार का बखूबी प्रयोग हुआ है।

अन्त में हम कह सकते हैं कि यदि पद्मावत जायसी के यश का आधार है तो निःसंदेह नागमती का वियोग खण्ड (अतिशयोक्ति के कारण) पद्मावत के यश का आधार है।

अंत टिप्पणी

1 *काव्यशास्त्र के सिद्धान्त कृष्ण देव झारी पृष्ठ क्रं. 34*
2 *काव्यशास्त्र के सिद्धान्त कृष्ण देव झारी पृष्ठ क्रं. 34*
3 *जायसी ग्रंथावली,नागमती वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं. 253*
4 *जायसी ग्रंथावली वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं. 253*
5 *जायसी ग्रंथावली वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं 261*
6 *जायसी ग्रंथावली वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं 261*
7 *जायसी ग्रंथावली वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं 264*
8 *जायसी ग्रंथावली वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं 262*
9 *जायसी ग्रंथावली वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं 262*
10 *जायसी ग्रंथावली वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं 262*
11 *जायसी ग्रंथावली वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं 265*
12 *जायसी ग्रंथावली वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं 265*
13 *जायसी ग्रंथावली वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं 255*
14 *जायसी ग्रंथावली वियोगखण्ड, संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ क्रं 257*